सकलशर्मदं --- तापत्रयहरणम् - ॐ हरः -
वज्रंखड्गं त्रिशूलं पाशुं धारयते ।
अभयंकुशवरपाशं घण्टां वृदधते ।। ॐ हरः --
मूर्ध्नि राजति गंगा शिवसंगमुपनीतम् ।
कलाश्चाँकितवक्षसि पन्नगमुपवीतम् । ॐ हरः -
धाते भरणि जम्भे - - -

माडल टाउन दिल्ली ६

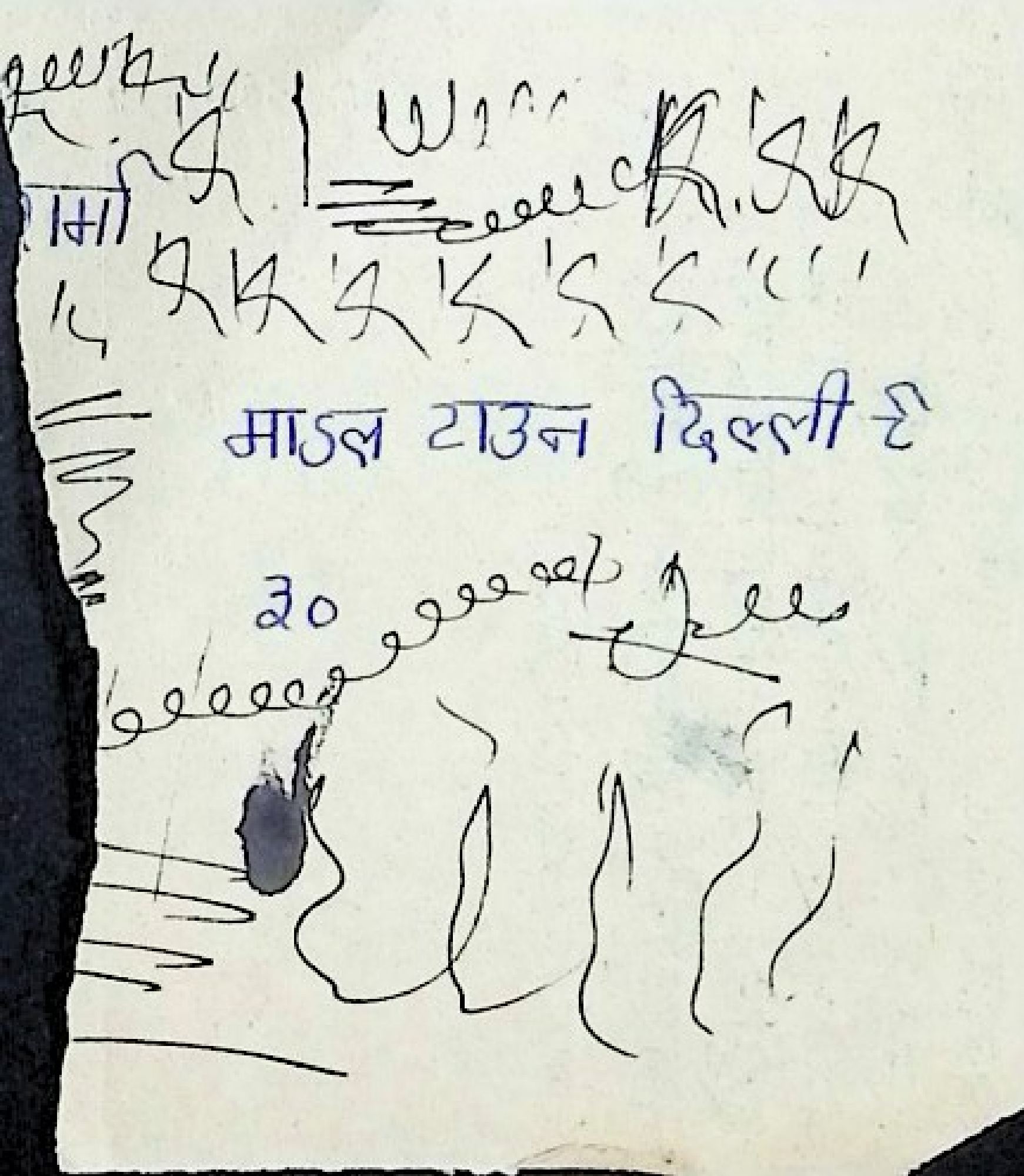

त्रिभोनंशू केन्द्रशू २ राशि से कम केन्द्र होवे तो दोभवति आपि भजेरना है। त्रिभोर्धेशू
२ राशि से अधिक होवेतो उसे विशोध्यशू ६ राशि में हीन करके तदा दोस्यात्
तवी भजहोता है अंका धिकं ६ राशि से अधिक होवेतो चक्रात विशोध्यशू
१२ राशि में हीन करके तदा दोस्यात् तव भजहोता है। भजोनै भज-
कके हीनं जो त्रिभशू २ राशि है वह कोठिस्यात् कोठि होती है।
त्रित्रिभे ३।२ राशियों का एकैकंशू पदशू स्यात् एकेक पद होताहै।।
अष्टाद्वियंशा सूर्यमन्दोच्चं भवेत् ।।२८ अंश का सूर्य मन्दोच्च होता है-
ग्रहवर्जितं मन्दोच्चं ग्रह करके हीन जो मन्दोच्च है वधे तदाख्यं
विवेकि उस्की संज्ञा को केन्द्रं त्रिगदितं केंशू कहते हैं क्रियज्वनाद्ये
कोई मेषादि वा दि ४।६ राशि पर्यंत केन्द्र होवे तो स्वशू कर्माशू
फलशू स्यात् धन कर्मा मन्द फल होता है अन्य खे केन्द्रशू विधेयशू
इसके उपरान्त सूर्य केंद्र रख कर तद्भजभाग उस्के भजांशो का-
एकेचरत्व नवमांश करके उन नघ्ना नखा २० में हीन करके जोशेषाक्
से निकला पुरान फल तेपृथक स्थाप्य उसको पृथक रखकर तद्गतेशेन
एक स्थान वाले का नवमांश करके हीन जो नगगेषभि ५ अंशो हैं
उस्का द्वितिय स्थान पुरानफल में परिछन्नभाग केके तै अंशादिक
फलशू स्यात् वह अंशादि मन्द फल होता है।

सायन भाग सूर्ये अयनांश एक रूपे जिसदिन मेषा दिगे सति मेष राशी
के आदि में होवे उसदिन कि. या दिनार्द्ध डा जो दिनार्द्ध से प्राग्वा दशां
गुल कि. आभा छाया है सा पलभा भवेत् वह पलभा होती है सामिस्या
उस पलभा को २ स्थान में रखकर एक स्थान में दशमि १० से द्वितिय
स्थानमें भंजगे न से तृतिय स्थान में दिगि १० से हता गुणाकर तत;
प्रत्या गुणो धृता कार्यो अन्ती गुणान फल में २ का भाग लेके तदा-
चरार्द्धानि स्यु तव चर खंडा होते होते हैं। सायन उच्चांश सायन-
सूर्य के भुजदे संख्य भुज की राशि की संख्या परिमित चरार्द्ध-
योगो-चर खंडो के योग में लव अंशा दियों को भोग्य घाताप्त भोग्य-
चर खंड से गुणा कर स्वाग् न्यासि ३० का भाग लेके एक एक
कर्मे चरम स्थान पलात्मक चर होता है। तत्र तपने नुल्लाज
षड़भे तदनार सायनार्क भुजादि ६। ६ राशी पर्यंत होवेतो धनर्णसंस्था
चर धन कला होता है अन्ते अन्यथा सायंकाल में विपरीत कर्म से
होता है॥ २०।

तात्चरम् उस चर कों अलगो विन्निप्तिकास् देयं, स्वयंके विकल्पमें धन ऋण देके, स्पष्ट रवि होता है। तत् स्वं द्विगुणं नवोद्धृतं इसी प्रकार द्विगुणित चरमें ८ का भाग लेके मध्यन्दो रेखान्त संस्कृत मध्यम चन्द्रमा के कल्पास् देयं कलादियों मे धन ऋण देके चर संस्कृत मध्यम चन्द्रमा होता है भाप्तयत् २७ का भाग लिया जिसमे ऐसा जो ऊनरो फल्वं सूर्यका मन्दफल है तत् अपि नवे देयम् उस्कों चर संस्कृत मध्यम-चैद्रमा के अंशादियोंमें धन ऋण देके मन्द संस्कृत मध्यम-चन्द्रमा होता है अथ. इसके उपरान्त शक शाकाब्द में वेद ४ अब्धि ४ अब्धि ४ अर्थात् ४४४ ऊन हीन करने से तत; रवस हुन उस्मे ६० का भाग लेके अयनांशास्य. अयनांश होते हैं ॥ रवेश्चरे सायनार्कि अयनांश युक्त सूर्य क्रिय धट रसमे मेष कल्पादि ६।६ राशी पर्यंत होवे तो क्रमसे सोम्य याम्यो गोलौ स्तः. उत्तर दक्षिणा गोलस्थ हो ता है अथ नक्षत्र नक्षत्र कर्कात् च षडभे मकर कर्कादि ६।६ राशी पर्यंत होवे तो क्रमसे ते. अयने स्तः वह उत्तरायन दक्षिणायन होता है अथ इसके उपरान्त पंचेन्दु नाडि १५ घटि में गोलयो उत्तर दक्षिणा गोलके विषे चरपल मितोना कार्या चरपल युक्त हीन करने से तदा घटार्द्ध स्यात् तव दिनार्द्ध होता है तत् ग्र ऊन खखराग उस दिनार्द्ध करके हीन जो ३० घटि हैं वह-

निशार्द्ध स्यात् रा अर्द्ध होता है अन्य इसके उपरांत इष्टघ्नि ५ से गुणित
किया जो अंश छाया पल्लभा उसमें अंशभाया ऋणी पल्लभा के वर्गका
दशम लवोना कार्यो दशमांश हीन करने से इष्यम् छाया पल्यांशास्तु
वह दक्षिण दिशा के अंशांश होते हैं ॥२२॥ विधो केन्द्र चन्द्र केन्द्र का द्वितीय
भुजांशो का षष्ठोन निघ्ना षष्ठांश करके उन निघ्न जो खखाभ्रा ३० अंश हैं उसको
पृथक स्थापे. दो स्थानमें रखकर तन्नतखंडोना निते उसका नतखंडांश करके
हीन जो रसादौ ५६ अंश हैं उसका द्वितीय स्थान गत्यन फल में हना
भाग लेके तेच लवाढ्यं फलं स्यात् वह अंशादि मन्दफल होता है
ताभ्यांच संस्कृतौ तिन मन्द फलो करके संस्कृत दो सूर्य चन्द्रमा
है वह स्फुटो रवि न्दू स्त स्पष्ट सूर्य-चन्द्रमा होते हैं ॥२३॥

रु द्वा १२ भैं. केन्द्रस्थ कोटि ज्यव. केन्द्रके भुजकोटि के अंश करके उस्का खाखिवे ज्यव. वीशद्वा भाग. ऊन निघ्ना कार्या ऊन निघ्न करेके: ते खे चेत् वह स्वर्य होवे तो तर्हि द्विकहता: कार्मा १२ का भाग देने के तदा खे कलाद्यं गति फलम् स्यात् तब रवि के कलादि गति फल होता है चेत् यदि जो शशिन: चन्द्रमा होवे तो तर्हि द्विनिघ्ना: कार्यो तब द्विगुणि तकरेके तत: तद नंतर स्वांगांशेक न सहिता च कार्या उस्मे उसी का षष्ठ भाग युक्तकरेके तदा चन्द्रगतेकलाद्यं फलं स्यात् तब चन्द्रमा के कलादि गति फल होगा है ।। कुजीर सृग षट्क गते केंद्रे कर्क मकरादि धाद राशि पर्यंत केन्द्र होवे तो क्रमसे गतौ धनर्णं भवत: गति फल धन ऋण होता है उस्को मध्य गति में धन ऋण देके सा स्फुट गति भवति वह स्पष्ट गति होती है ।। २४ ।।

भौम मंगल अर्कि शनि इज्य बृहस्पति इनकरके विहीन हीन जो, मध्यम रवि मध्य
मार्क है वह स्वाँश केन्द्र स्पष्ट, वह अपने २ आश केन्द्र होते हैं विद्
पूर्वोक्त उक्तम् मध्य, उक्त का आशकेन्द्र पहिलो कहादिया है इदं
यह आश केन्द्र राशीद्धर्म राशिसे अधिक होवे तो, इनमाद शुद्धकार्य
१२ राशिमे मैं शोधित करके तदंशाः दिनेभक्ताः संतः उसके अंशादि
योमें ७५ का भाग लेके इह क्रमात् यह क्रमसे स्वादि फल जो
शून्यादि फल मिलना गतपरिमित अंक लेके के निचे का गतांक
भवेत् गतांक होताहै आगेका एष्यांक होताहै इनका अंतर करके
अर्धोदयार्द्ध इन क्षय-चय से हतात् गणित किया जो शेषात्
शेष अंशादि उसमें वर्णांक लब्धि ७५ का भाग लेके लब्धांक
क्षय-चय के विषे हीन एक कर्म हीन एक करनेसे अर्धो
दिग् हत इसमे ७० का भाग लेके लब्धांक फलम् भवति
अंशादि शीघ्र फल होता है ॥६॥

मृदु केन्द्र भुजांशका मृदुकेन्द्र के भुजांशो में दिनात्मा कार्या ५५ का भाग देने के तदा यत् फलम् तैव जो फल मिले तत्परिमित प्रगत अंक स्यात् गतांक होता है तद्भिन्नेष्य तिनकरके हीन जो इष्यांक उसमें परिशेष हो शेष अंशादि ग्रहण कर तस्मात् दिनाप्ति युक्त उसमें ५५ का भाग युक्त करके तत: दशभक्त २० का भाग देने के तदा अंशकादि मान्द फलम् भवति तब अंशादि मन्द फल होता है ॥७॥ प्राक्चलफलस्य दलम् ॥ प्रथम शीघ्रफलार्द्ध को मध्यमे विदध्यात् मध्यम ग्रहमें धन ऋण देके तस्मात् उससे मान्द फलं साध्यम् ॥ मान्द फल साधकर तत् आरब्धेन उस संपूर्ण मन्दफल को विलोमं विदध्यात् ॥ विपरीत करने से धन ऋण देके अत: शीघ्रम् साध्यम् इससे शीघ्र फल साधकर तत् सर्व तत्कालवेधयोत् उस सधे हुये सम्पूर्ण शीघ्रफल को मन्दफल संस्कृत मध्यमग्रह में धन ऋण देके उसी स्पष्ट: भवेत् वह स्पष्ट कहा है

अर्कि शनि अस्तग्र मेषाद्य गुरुणा बृहस्पति इनके मान्दं कालार मन्दांक के अन्तर में क्रमेण क्रमसे शनिको वाणनेत्र ५५ का मेषाद्य को शेर ५५ का बृहस्पति को खरोमे ३० का भक्त भागदेने की दृष्टि गुरु को विधो शुक्र के मान्दा कालार को दिशे २ से ग्रहण कर इस भाजक से उस भाग देने के कलाद्यो जो कलादि फल मिले तत् प्रागपन इतो दद्यात् उसको सप गति में धन ऋण देके तदा सा स्पष्ट गति: भवति तब वह मन्द स्पष्ट गति होती है

भौमात् सौम्य से आदि ग्रहो के चलाकविवरम् चालनकाल में क्रमेण क्रमेस
सौम्य को शर हत ५ का बुधको स्वकर्णशाता पंचमांश युक्त करके बृहस्पति
को त्रिहत ३ का शुक्रको ६ का भागलेके शनि को द्विगुणा भक्तकार्यमे
द्विगुणित करके ५ का भाग देनेके लब्धि गतेशीघ्रफलं स्यात् लब्धांक
गतिका शीघ्रफल होताहै क्षयचय के विषे तद्धीन युक्त उसशीघ्र
फल करके हीन युत जो शुक्र स्फुट मन्द स्पष्ट गति हैं वह स्फुटस्पाष्ट
स्पष्ट गति होती हैं चेत् यदि जो ऋण फलं वह ऋण फल अधिक
होवेतो तदा ऋणात्मक ऋण फल मे पतिता कार्यं हीन करके शेषम् वक्र
स्यात् शेष वक्र गति होती हैं ॥१२॥

यदा शुक्रादयो: चल भव: अंक: अंत्य गा: स्यात् जब शुक्र मंगल का चलांक अन्त का होजाय तो तदा शेषांशका तव शेष अंशादि पृथक स्थाप्य दो स्थान में रखकर एक स्थान वाला अंक भूम्य ५ अंश में पतित च कार्यो हीन करके तयो र्यअल्पा तिनमें जो न्यून होवे ने भागो वह शुद्ध होवेगा त्रिविहता ३ का भाग लेके अवशेष मंगल होवे तो अष्टभक्त ८ का भाग लेके स्वर्णीय वत अपने शीघ्र फल के समान स्फुटयो देय शुक्र मंगल में धनऋण देवे तदा तौ स्फुटौ स्त: तव तिन दोनों का शुद्ध स्पष्ट होता है ॥१२॥

चेत् यदि जो कुज बुध गुरुजानां मंगल बुध शुक्र का चलांक अंतिम स्थान चलांक अन्त्य अंत्य का होजाय तो तदा दश हत परिशेषांशा तव शेषादि अंशों को १० से गुणाकरके उसमें अंशेषा अंशसे मंगल को ७ का भाग दे भाग आदि का शुक्र को अग्नि ३ का भक्त भाग लेके फलन्तु अंशेषा फल अंशादा मंगल को इष्ट दहन ३५ बुध को सप्तगोनि ८७ शुक्र के त्रिघातो ५२ मूल कार्मि एक करके तत गति फलं स्यात् वह गति फल होता है तदा पूर्ववत् तव विधि नहिं है ॥१३॥

कुजादयः क्रमात् मंगल से आदि ग्रहों के क्रम से मंगल के बिम्बपे १६३
बुध के मरांजिछाभि १७५ बृहस्पति के सारके १२५ शुक्र के नगभूपे १६७
शनि के भिभवे ११३ चल केन्द्र वे द्वितीय शीघ्र केन्द्र के अंश होवेंतो
वर्क्ष प्रयाणि वक्रि होते है तथा तैसे इन अंशो को भगणांत २६० में
के पाति हीन करने से तै मार्गी वजाणि उतने अंशो करके मार्गी
होजाते है ॥१५॥ द्वितीजः मंगल के अष्टयमे २८ अंश बृहस्पति के
इन्दै १६ अंश रविज शनि के सप्त चन्दै ७ अंश द्वितीय केन्द्र के होवे तो
पूर्व उदेति पूर्वोदय होताहै स्वस्वोदय भाग महीने अपने २
उदयांशो करके हीन जो भगणांशे ३६० अंश है उतने अंशो करके
अपरस्त अस्त प्रयाणि पश्चिमास्त होजाते है ॥ रवशरै ५० अंश जितने
२४ अंश द्वितीय केन्द्र के होवे तो वे पश्चिम दिशा में दृश्यगवो
बुध शुक्र का उदय होता है अब दिनै १२५ अंश नगाद्रि भूवि

१७ अंश द्वितीय शीघ्र केन्द्र के होवे तो तरे सप्तमवो बुधशुक्र का अस्तस्थात् अस्त होता है तथा अदन नवमे २० ५ अंश ग्य हीन्दमि १८३ अंश द्वितीय शीघ्र केन्द्र के होवे तो पश्चिम प्राक् पूर्व दिशा मैं. सप्तमवो बुधशुक्र का उदय होता है दिग् दहने ३१० अंश वक्र ३३६ अंश द्वितीय शीघ्र केन्द्र के होवे तो प्राक् [redacted] दिशामें सप्तमवो बुधशुक्र का अस्तः स्थात् अस्त होता है वक्रोदयादि गतितांश फल वक्र दियो के कहे हुये जो द्वितीय शीघ्र केन्द्र के अंश वह यदि जो केन्द्रांशका अभिन्न शीघ्र केन्द्र के अंश अधिक न्यास्य अधिक न्यून होवे तो तदा दिगतिस्थात् नव मेगाने को दिगणा कर बुध को त्रिभक्त ३ का भाग लेके बृहस्पति को सांकाशकाः उसीका नवमांश युक्त करके शुक्र को दशहृताङ्क हुता १० से गुणा कर ध का भाग लेके शनि को

कुभका कार्यो१का भागलेके आगत दिवसैः वक्रादिनादि
क्रमसे क्रमसे वक्राद्यं वक्रादियो के गतेष्यस्य स्यात् गतेष्य
होतेहैं ॥१८॥ चान्द्र वर्षके पूर्वास्त पूर्वास्त होनेसे
दश१२ दिनमें परे उदय पश्चिमोदय होता है तत्पश्च
उससे उग्राल दश१२ दिनमें अनुजू गति वक्रि होता है
तत्पर उससे उग्राल दहन२ दिनमें तोयास्त पश्चि मास्त
होता है तत्पश्च उससे उग्राल दशे दिने१२ दिन में अस्त
स्यात् पूर्वास्त होता है अथ क्रमा अथेधनलग्न क्रम
से द्विमा२ महिने में उससे उग्राल अष्टाभे८ महिने में उससे
उग्राल पश्चिभवा१२ दिन में उससे उग्राल आंध्रेणा ८

~~[illegible]~~ दिनसे उससे उधाल विचरती केन २२ दिन
में उससे उधाल अष्टमासे ८ महिने में भृगो तडत स्यात्
शुक्रका उसी प्रकार पूर्व पश्चिमोदय वक्र मार्गे पूर्व पश्चिमास्त
होता है ८।।

श्रीगरोशायनमः

गजभानि २७ गोंकदला २८ श्विपदहना ३२ एते क्रमस्था यह क्रम से रखकर
मेषादि अयाराणा मेष से मिलन पर्यन्ता विघटिका लंकोदयास्तु पलात्मक लंकोदय
होते हैं एते एव उत्क्रमस्था इन को उत्क्रम से रखकर ककोदि अयाराणा कर्क
से कन्या पर्यन्त विघटिका लंकोदयास्तु पलात्मक लंकोदय होते हैं इसे क्रम
गोत्क्रमगोत्क्रमस्था यह क्रम उत्क्रम से स्थित जो पलात्मक लंकोदय
इनमें क्रमगोत्क्रमस्थ क्रम उत्क्रम से स्थित जो चरदल चरखंड उसको
हीनान्विता हीन युक्त करने से क्रमात क्रम से मेषादि मेष से कन्या पर्यन्त
उत्क्रमात उत्क्रम से धनु पलादि मीन पर्यन्त स्वदेशी उदयका
ल होते हैं ॥३॥ यस्मिन् काले लग्नं साधनं जिस समय का
लग्न साधन करना होवे तत्कालार्क उस समय के तात्कालिक सूर्य
में सायन कार्य अयूनांश युक्त करके उस्की राशि परिमित लंक
स्थोदय होता है आछौ का भोग्य स्थोदय होता है सायनार्क की
राश दूर करके अंशादि ३० में हीन करने से भोग्यैषा भोग्यांश

होतेहैं उसको स्वोदयघ्रा मे प स्वोदय से (गणा कर उसमें
स्वल्पछ्ना ३० का भाग लेके भोग्य काल स्यात् भोग्य काल
होताहै एवं यातनाशे यात कालः भवेत् इसी प्रकार यातशों
से यात काल होता है भोग्यः भोग्य काल को अभीष्टनाड़ि
पलेभ्य इष्टकाल के पल्ना करके उसमें संशोधन करके तदन
तरसात् गृहोदयात् च. जहीहि तदनन्तर उसमें भोग्य स्वोदय
से आधेके जितने खंड घटे उनमें घटाई के जो नघटे वह अशुद्ध स्वोदय होताहै ॥
* शोधं गगनं गुणाद्धा ॥ शेषादि ३० से गुणकर
हत अशुद्ध खंड को भाग लेके फल नवाद्यं स्यात् फल
अंशादि होताहै तत अजादि गृहे अशुद्ध पूर्व साहेन उस अंशा
दियों के राशि स्थान में सेघसे आदि अशुद्ध खंड की पूर्व राशि
खंडकर अद्यः अयनांश हीन करके
विलग्नं भवति लग्न स्पष्ट होताहै ॥

हे, इष्टकालअल्पस्यात्

भोग्यात्; भोग्यकाल्न इष्टकाल्न~~घटी~~से इष्टकाल अल्प होवे तो इष्टघटात्मको को
रवेणमा हतात् ३० से गुणाकर उसमें स्वोदयांशाश्च एक सायनार्की राशेके
उदयको भागनेके लब्धअंशादि करके युत जो भास्कर सूर्य है वह तत्कालीन
इष्टकाल्नीन लग्नस्पष्ट होता है अर्क भोग्य सूर्य के भोग्यकाल में तनो युक्त
काल्नान्वितो लग्नके एक काल्नकी एक करके तत्; युक्तमध्योदय उसमे सायन
लग्न सायनार्के के मध्यके उदय एक करने से अभीष्टकाल्नभवेत् अ पल्नात्मक
इष्टकाल्न होता है॥

अक्षपाशशरीयमहादेशाः

	सू०	चं०	मौ०
मे०	२०	०७	
४			
०१	,,		
१३	,,		
२५	,,		
४२	,,		
सं०	२८८०	२०००	

मृ०
१
१०
१६
४४
०८

२	
२७	
००	
२०	

प्रत्ययोगीनीदशाः

मृ०	मे०
२	४
३	०
८	२०
	२८
	३१
३१	
२०	२८८०

१०
२४
२१
५०

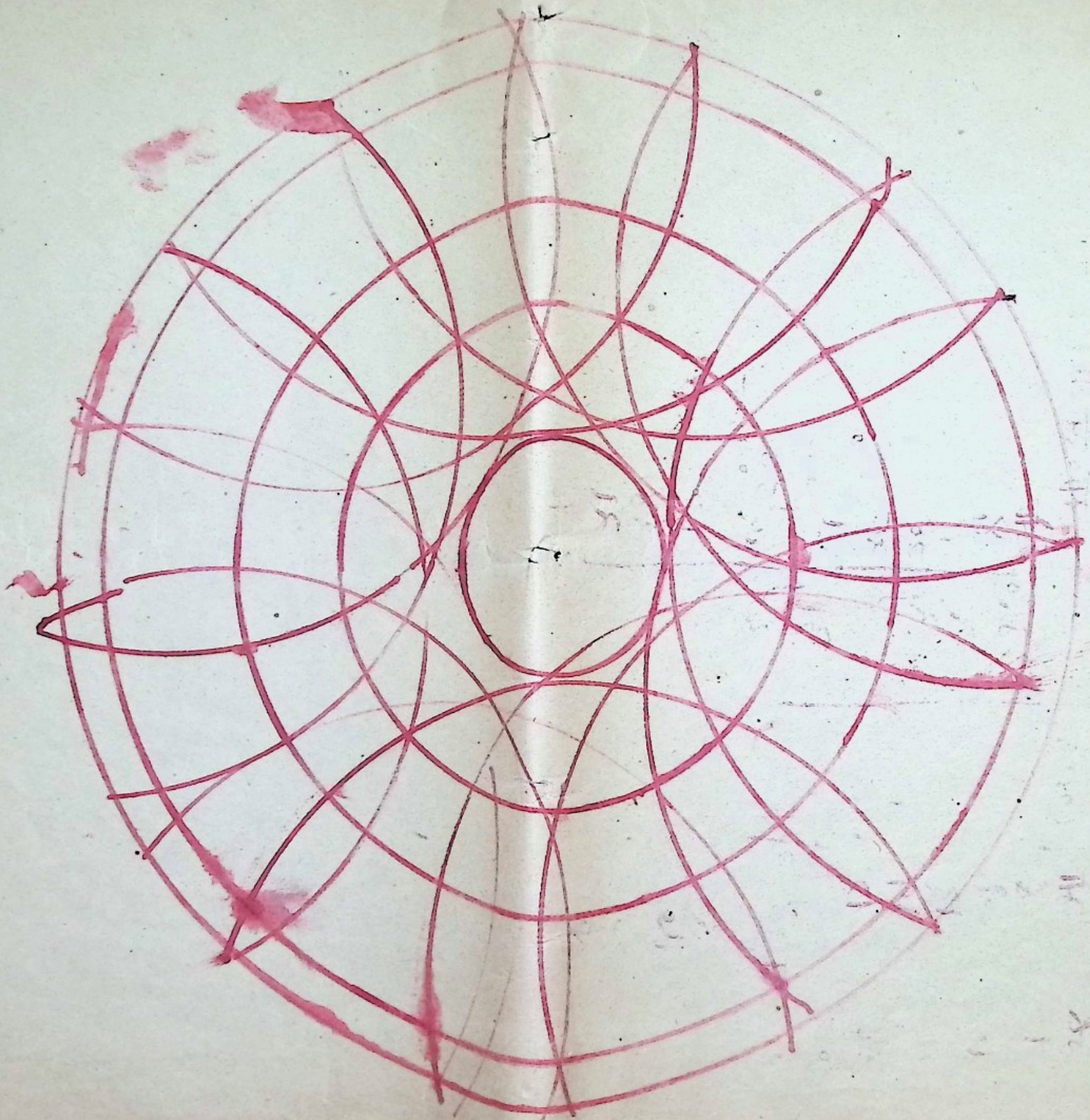

सूर्यादिस्थग्रहासगतिकाः ॥

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०
०१	५१	०३	१	०१	११	८	००
०३	००	०८	३३	०१	२६	०४	२८
५३	४०	०६	२०	३७	१८	५७	
२८	१८	०१	०२	३४	५८	२२	२८

५७	८०४	३४	४८	१४	१७	०४	३
३८	५५	०२	५६	२०	०२	००	११
शी०	शी०	मा	ज०	ग्र०	मा०	व०	वं०

तन्यादिभावाससंधयः

ता०										
२	३	३	४	४	४	५	५	६	७	७	८
२२	४	१७	००	१२	२५	८	२५	१२	००	१७	४
१५	५३	३०	०७	४५	२२	००	२२	४५	७	३०	५३
१४	४३	१२	४०	०८	३६	११	३६	०८	४०	१२	४३
						क					
८						११					
२२						०८					
१५						००					
१४						११					

पूर्व

उनता २/१५

ल	६०
२	११
२२	०८
१५	००
१४	११

द्युभुक्त यहकी गति को गतगम्यदिनानि. गत. तथा. आगामी दिनोंसे आहत गुणाकरके स्वस्वभागांशा उसमें द्यु० से. भाग देनेके जो अंशादि शुद्धि फल मिले उसको यह विषुक् युतः यहमें हीन युक् करनेसे यह स्पष्ट यह होते तथा उसीप्रकार द्युभुक्त यहकी गतिको घटिघ्ना इष्टघटि पूर्वसे गुणाकर स्वसे सम्बन्ध द्यु० से भागदेके लब्ध कलादि, उन. संयुत कार्य धन गुण करके तत्कालभव: यह: स्पष्ट तात्कालिक यह स्पष्ट होता है॥

इष्टसाधनम्

चैत्रे माधव-चाश्विने क्रतमनु १४ मार्गेयमन्वग्भ्र ३ उर्जे फाल्गुनके ष
वाणशशिन १५ पौषे त्वषविन्दवः ॥ ६० ॥ ज्ञेये ज्येष्ठे श्रावणे भाद्रयो
शरन्त्रिभि ३५ त्वाषाढ़े वारणै ५ रुणा माधेनेत्र शरेन्दु ५२ मास ध्रुवकः शंकु श्च
शर्त्राग्नले ॥ १ ॥ शंकु शर्त्राग्नले छायो सहितो भाग हारकः ॥
अनेनो नः ध्रुवध्रुवः एवध्यः घटिशेष एष्यानि चेत् ॥ २ ॥

नतसाधनम् ॥

रात्रे शेष मित यतं दिनदले ना हो गतं शेषकं विश्लेषं खल पूर्व पश्चिम
नतं भिंथ-च्यतं चेन्नतम् ॥ यत्पूर्वो न्नत षड्भयुक्त रविनः पश्चान्नता
दित्यतो यल्लंकोदयकेऽथ लग्न मिवं तन्माधयं सषड्भं सवम् ॥

अर्कविधो हीनः कृतो है सूर्य जिसमें ऐसा जो चन्द्रमा है उसका लवा कार्यो-
अंश करके तेः यस्मिन्नंशे कार्यो उस अंश का भाग लेके फलं यात् तिथि
स्यात् जो फल मिला वह गत तिथि होती है शेषं अपियात् शेष अंशादि
भुक्त तिथि होती है इदं इस भुक्त तिथि को हृतात् ६२ में अपतितम् हीन
करके भोग्यः स्यात् भोग्य तिथि होती है त्रयो तिन भुक्त भोग्य तिथि
यों के विलिप्ता विकला करके इसमें अंत्ययोरनार भाजिता कार्यो सूर्य
चन्द्र स्पष्ट गति को अनार का भाग लेके तदा व्याप्ति क्रमात् तव लब्धांक
क्रमसे यातैष्यः घाटिका स्युः तिथि के। तिथि के गतैष्य घटिका होती है
गत तिथि द्विघ्नि गत तिथि दूणा करके उसको अद्रि तर्क ७ से तक करके
शेषाक वधात् वध लेआदि तिथे पूर्वार्द्धे तिथि के पूर्वार्द्ध में करण भवेत्
करण होता है सैकनतात् उसमें एक घटाके अधो दले करणं स्यात्
तिथि के उत्तरार्द्ध में करण होता है अथ इसके उपाल कृष्ण भूतौ तावद्धनि
कृष्ण चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध के आधे भाग में शकुनेस्तु शकुनी करणं होता है

शेषजोवाकिंचचलम्भू... उसम्भुक्तभोग्यके... गगनषष्टिनिघ्ने ६०गुणाकार

अथ इस्के उपाल विधौ चन्द्रमाः साके सितगो सहित सूर्य चन्द्रमा तिनके
लिप्ता कलादी करके उसमें खरवाणो हृता ८०० का भाग लेके फल
क्रमात् फल क्रमसे याते भयती स्तः गत नक्षत्र योग होता है तेथो
गतेष्ये जिन गतेष्यों को गगन षष्टि निघ्ने ६० से गुणा कर उसमें इन्दो
शक्ति हृते चन्द्र स्पष्ट गति का भाग लेके जवेकेथो विहृते चन्द्र स्पष्ट गति
के योग से भाग लेके तदाक्रमात् नव क्रम से गतेष्य नाड्यः स्युः
नक्षत्र योग की गतेष्य घटि होती है ॥२५॥

श्रीगणेशाय नमः ग्रथलंघनसारणी यन्त्र ॥ पलभा ७।२५ ग्रहलाघ यन्त्रथ नोंशाः २३।२६

ग्रंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
मे ०	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५
१२	३७	४४	५१	५८	०५	१२	१९	२६	३२	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	०२	०९	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७
	५६	४८	४०	३२	२४	१६	०८	००	५२	४४	३५	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	०८	००	५२	४४	३६	२८	२०	१२	०४
वृ० १	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९
२	०५	१३	२२	२९	३७	४५	५३	०१	०९	१७	२५	३३	४१	५०	५८	०६	१४	२३	३०	३८	४६	५४	०२	१०	१९	२६	३४	४२	५०	५८
३	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	००	०४	०८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	०४
२ ०	२०	२०	१०	१०	२०	१०	२१	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
८	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४८	५८
मि. ५८	०२	००	५८	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४०	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	२८	२६	२४	२२	२०	०८	०६
क. ३ ०	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६																						
११	०८	२१	२२	४४	५६	०६	२८																						
३४	४०	२४	४८	२२	००	३४	०८																						

	১	২	৩	৪	৫	৬	৭	৮	৯	১০	১১	১২	১৩	১৪	১৫	১৬	১৭	১৮	১৯	২০	২১	২২	২৩	২৪	২৫	২৬	২৭	২৮	২৯	৩০
১০																													
									০	০	০	০	০	০	০	১	১	১	১	১	১	১	১	২	২	২	২	২	২
১১									৫	২৩	২০	২৬	৩৪	৪১	৪৮	৪৪	১	৮	১৭	২২	২৮	৩৫	৪৩	৪৮	৫৫	০৩	১০	১৬	২৪	৩১
									৪২	৪৪	৩৫	২৮	২০	৭২	০৪	৫৫	৪৮	৪০	৩২	২৪	৭৫	০৮	০	৪২	৪৪	৩৫	২৮	২০	৭২	৪
~~১~~																													